ज्योतिष विज्ञान नहीं हैं

डॉ. जयंत नारलीकर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में फरवरी, 2001 से ज्योतिष के पाठ्यक्रम शुरू करने की घोषणा की और इस विषय को विज्ञान का दर्जा देते हुए इसका नाम ज्योतिष विज्ञान कर दिया। पाठ्यक्रम की विवरणिका में कहा गया है कि ज्योतिष विज्ञान हमारी उत्कृष्ट पारंपरिक धरोहर है तथा विश्व में घटने वाली घटनाओं आदि के क्रम को समझने में हमारी मदद करता है।

फलित ज्योतिष और खगोलशास्त्र विषयों को लेकर आम आदमी के मन में हमेशा ही दुविधा बनी रहती है। लेकिन यह तो पक्की बात है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का इशारा फलित ज्योतिष की ओर ही है, खगोलशास्त्र की ओर नहीं। खगोलशास्त्र के अध्ययन में मानव जीवन में घटने वाली घटनाओं, हिन्दू गणित, वास्तुशास्त्र, मौसम इत्यादि विषयों के बारे में भी अध्ययन या शोध नहीं होता लेकिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विवरणिका में उपरोक्त सभी विषयों के इसमें शामिल होने का दावा किया गया है।

पॉकेट इंग्लिश ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में फलित ज्योतिष की व्याख्या निम्नानुसार दी गई है। इस विषय में मानव जीवन पर ग्रहों और तारों के प्रभाव का अतार्किक व गूढ़ परिणामों का अध्ययन किया जाता है। इसी डिक्शनरी में खगोलशास्त्र की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि यह आकाश में स्थित ग्रह, तारों और अन्य पदार्थों के अध्ययन का विज्ञान है।

आम आदमी के मन में इस विषय को लेकर बनी दुविधा दूर करने के उद्देश्य से यह भूमिका लिखनी पड़ी कि फलित ज्योतिष न तो विज्ञान है और न वैदिक।

फलित ज्योतिष वैदिक नहीं

टी.आय.एफ.आर.,मुंबई में गणित के वरिष्ठ प्राध्यापक एस.जी.दाणी ने कुछ वर्ष पूर्व *इकॉनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली* में एक लेख में वैदिक गणित का खोखलापन साबित कर दिया था। इस लेख से हम यह शिक्षा तो ले ही सकते हैं कि किसी भी वस्तु को वैदिक कालीन या पुरातन कहने से पहले बहुत सावधानी बरतने की ज़रूरत है।

भारत में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विद्या देने की मौखिक परम्परा होने के कारण कौन-सा ज्ञान किस समय अस्तित्व में था इस बात की बहुत कम प्रामाणिक जानकारी आज हमारे पास उपलब्ध है। चीन, अरब या मध्यकालीन युरोपीय संस्कृति की बात भारतीय संस्कृति से अलग है क्योंकि वहां अनेक बातें लिखकर रखने की परम्परा थी। हमारे यहां जो लिखित प्रमाण मिले हैं उनमें बाद के अनेक लेखकों के विचार जुड़े हुए से लगते हैं।

एक बार तो मैं भी इस चक्कर में फंस गया था। मालिक को कर्मचारियों के भले के लिए क्या-क्या करना चाहिए इस बारे में शुकनीति नामक ग्रंथ में कुछ जानकारी दी गई थी। जैसे भविष्य निधि निर्वाह, कर्मचारी की विधवा को मदद इत्यादि के बारे में कुछ श्लोकों पर नज़र गई। मैंने उनकी व्याख्या की कि पांचवीं शताब्दी में आज के प्रश्नों के उत्तर किस प्रकार दिए गए हैं। बाद में मुझे पता चला कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के नियमों को देखकर किसी ने ये श्लोक शुकनीति में अपनी तरफ से जोड़ दिए थे। मैं शुक्रगुज़ार हुआ उन विद्वानों का जिन्होंने इस ओर मेरा ध्यान दिलाया।

वैदिक साहित्य का अध्ययन करते हुए कहीं से भी

ऐसे संकेत नहीं मिलते कि नवग्रहों का मानव जीवन पर किसी भी तरह का असर होता है। नक्षत्रों की स्थिति से मिलने वाले संकेतों, वर्ष भर अलग-अलग समय पर होने वाले यज्ञ, और यज्ञ में दी जाने वाली बली के बारे में वैदिक साहित्य में जानकारी मिलती है। ग्रीक और अरब लोगों की मार्फत भारत में सात दिनों का सप्ताह आया। सप्ताह के सात दिन ग्रहों से सम्बंधित हैं (नवग्रहों में सूर्य और चन्द्र को भी शामिल किया जाता था)। ग्रहों का मानव जीवन पर रहस्यमय असर होने की कल्पना मूल रूप से युरोपियन है (लेकिन इसका वर्णन सूर्य सिद्धांत में भी मिलता है)। सूर्य सिद्धांत के एक श्लोक में सूर्य देवमय नामक राक्षस से कहते हैं, "तुम मेरे गांव अर्थात रोम जाओ चूंकि ब्रह्मा ने मुझे श्राप दिया है। इसलिए मैं वहां यवन रूप में आकर तुम्हें ज्ञान दूंगा।" संस्कृत पंडित सी. कण्हन राजा स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वैदिक परम्परा में फलित ज्योतिष है ही नहीं। (हो सकता है उसे बाद में किसी ने जोड़ा हो।) ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में एलेक्ज़ेंडर ने जब भारत पर आक्रमण किया था उस समय ऐसी कई अच्छी बुरी कल्पनाओं का प्रादुर्भाव भारत में हुआ था।

सूर्य, चन्द्र, तारे, ग्रह, नक्षत्र इत्यादि की गति से समय तय करना, पंचांग बनाना इत्यादि जानकारी तो वैदिक खगोलशास्त्र से मिलती है। विद्वानों में इसे लेकर मतभेद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि भारतीय खगोलशास्त्र के नाम से जो भी हमारे पास है वह पश्चिम से ही आया हुआ है। कुछ विद्वानों का मानना है कि पांचवी शताब्दी में जन्मे आर्यभट प्रथम से लेकर बारहवीं शताब्दी में जन्मे भास्कराचार्य तक का 700 वर्षों का काल भारत में वेदांग ज्योतिष का स्वर्ण युग था। और इस समय विकसित किया गया शास्त्र मूलतः भारतीय ही है। ऐसे सभी विवाद खगोलशास्त्र को लेकर हैं फलित ज्योतिष को लेकर नहीं।

ग्रीक भाषा में ग्रहों को प्लेनेट कहते हैं। प्लेनेट अर्थात घुमक्कड़। लम्बे समय के निरीक्षणों के बाद ग्रीक विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि तारों की तुलना में ग्रह अधिक घूमते हैं। और इसलिए वे ग्रहों को प्लेनेट (घुमक्कड़) कहते थे। ग्रीक विद्वानों के इस विचार पर दो तरह के विचार व्यक्त किए गए हैं : (1) खगोलशास्त्र पर आधारित; (2) ज्योतिष पर आधारित।

अरस्तू द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत पर आधारित विचारों के अनुसार सभी प्रकार का प्राकृतिक भ्रमण गोलाकार होता है। पृथ्वी स्थिर व सम्पूर्ण विश्व के बीचों बीच स्थित है। खगोलशास्त्र ग्रहों की अनियमित गतियों के अध्ययन पर आधारित है। पृथ्वी स्थिर है और सभी ग्रह गोलाकार घूमते हैं, इस मान्यता के आधार पर ग्रहों का भ्रमण पथ , तय करना उस समय के वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती थी। इस चुनौती के जवाब में उन्होंने अधिचक्र की कल्पना विकसित की। अधिचक्र अर्थात वृत्तों की शृंखला। इस शृंखला में प्रत्येक वृत्त का केंद्र बिंदु किसी दूसरे वृत्त की परिधि पर रहता है। यह विचार कुछ अजीब था और तकनीक बहुल। अर्थात बहुत अधिक समय खाऊ। आगे चलकर कॉपरनिकस, गैलीलियो, केपलर और न्यूटन इत्यादि द्वारा प्रस्तुत सूर्य केन्द्रित पद्धति के कारण अधिचक्र की कल्पना टूटी।

इसके विपरीत ज्योतिषियों ने माना कि ग्रहों का अनियमित भ्रमण उन्हें मिली हुई विशेष शक्तियों का परिणाम है। और यह भी समझ बनी कि इस विशेष शक्ति का असर मानव जाति पर भी होता है और यह शक्ति मानव जाति का भविष्य तय करती है। ज्योतिष की मूल धारणा हमें यहीं मिलती है। आज ग्रहों के सम्पूर्ण भ्रमण चक्र की जानकारी हमें उपलब्ध है। हम जानते हैं कि ग्रह अनियमित नहीं घूमते। ग्रहों के घूमने पर सूर्य के गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव होता है। हम बता सकते हैं कि ग्रह कैसे घूमते हैं। आज हम ग्रहों पर अन्तरिक्ष यान भेजकर नज़दीक से उनका अध्ययन कर सकते हैं। यह सब जानते हुए भी अगर लोग मानते हैं कि ग्रह उनके जीवन को प्रभावित करते हैं तो इसे अन्धविश्वास नहीं तो और क्या कहेंगे?

न्यूटन से पहले अर्थात 1685 तक इस तरह की मान्यताओं को माफ किया जा सकता है। लेकिन आज के युग में इस तरह की मान्यताएं अतार्किक लगती हैं। लोग

आज भी ज्योतिष में विश्वास क्यों करते हैं यह तो लेख के अंत में पता चलेगा ही।

ज्योतिष विज्ञान क्यों नहीं है

जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस पाठ्यक्रम को आरम्भ करने की घोषणा की तभी से भारतीय वैज्ञानिकों ने विरोध का मोर्चा खोल दिया। इसलिए नहीं कि ज्योतिष विद्या वैदिक है या नहीं वरन इसलिए कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इसे वैज्ञानिक रंग देने में लगा हुआ है। ज्योतिष को विज्ञान नहीं कहा जा सकता। आइए पहले देखते हैं कि इसके बारे में फलित ज्योतिष के समर्थक क्या कहते हैं।

(क) वैज्ञानिक निरीक्षणों से ग्रहों की स्थिति की जो जानकारी मिलती है उसका उपयोग खगोलशास्त्र व ज्योतिष विद्या दोनों में किया जाता है। अगर खगोलशास्त्र को विज्ञान माना जा सकता है, तो ज्योतिष को क्यों नहीं?

(ख) यदि ज्योतिषियों द्वारा की गई कोई भविष्यवाणी सही साबित होती है तो इसे विज्ञान मानने में क्या परेशानी है?

(ग) मौसम विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान में भी कई बार पूर्वानुमान गलत साबित होते हैं। चिकित्सकों के निदान में भी अंतर होता है। फिर भी इन दोनों विषयों को विज्ञान का दर्जा दिया जाता है लेकिन ज्योतिष के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है।

(घ) गहन अध्ययन के अभाव में कुछ ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां गलत साबित हो जाती हैं। दुर्भाग्य से कुछ अधकचरे ज्योतिष भी है। लेकिन ज्योतिष विद्या पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है।

(च) आज के वैज्ञानिक बहुत गैर ज़िम्मेदार है। उन्होंने ज्योतिष विद्या का गहन अध्ययन किए बिना ही इस विषय को नकार दिया है।

उक्त दलीलों का उत्तर देने से पहले हमें देखना होगा कि किसी विषय को विज्ञान का दर्जा देने के लिए उसे किन-किन मापदण्डों पर खरा उतरना पड़ता है : उपपत्ति सहित निष्कर्ष, प्रयोग, और निरीक्षण। अनेक शताब्दियों से इस पद्धति ने विज्ञान को समृद्ध किया है। ये पूरी प्रक्रिया चक्राकार है। इसका कहीं अन्त नहीं है। इस पद्धति से प्रकृति को और अच्छी तरह समझना और आगे बढ़ते जाना ही विज्ञान का उद्देश्य है।

लेकिन व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो यह सब जितना आसान लगता है उतना है नहीं। रास्ते में बहुत सारी परेशानियां और टेढ़े-मेढ़े रास्ते भी हैं। विज्ञान के इतिहास में भी कई गलत बातें हुई हैं। उलझाने वाले प्रयोग, गलत निरीक्षण, दुर्भावनापूर्ण निष्कर्ष इत्यादि। फिर भी अगर कोई निष्कर्ष गलत साबित होता है तो सभी वैज्ञानिक उसे मान्य करते हैं। वे यह भी नहीं कहते कि सभी प्रश्नों के उत्तर सिर्फ विज्ञान में ही मिलेंगे। वे अनुभवों से जान गए हैं कि जैसे-जैसे वे प्रगति करते हुए आगे बढ़ेंगे नई-नई चुनौतियों का सामना करना होगा लेकिन सभी कुछ पहले से ही तय नहीं किया जा सकता। उसके लिए अत्यधिक आकलन क्षमता होना आवश्यक है। फिर जिसे हम विज्ञान कहते है उसकी ताकत तो उसके अनुशासन में है। कैसे? आगे देखते हैं।

किसी वैज्ञानिक निष्कर्ष से हमने कौन-सी धारणाएं बनाई हैं उसे स्पष्ट रूप में बताना आवश्यक है। वे धारणाएं आज प्राप्त जानकारी के आधार पर तर्कसंगत होनी चाहिए। धारणाओं के आधार पर एकत्रित जानकारी का ताना-बाना तर्कों की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए जिसके आधार पर निष्कर्षों को ठीक से जांचा जा सके। निष्कर्ष निकालने वाले की बात स्पष्ट हो और गैर-ज़िम्मेदाराना ढंग से न कही जाए।

और निष्कर्ष निकालते समय विज्ञान के मूलतत्त्व में भी कोई बदलाव नहीं करना चाहिए। जो भी निष्कर्ष निकले हैं उनकी फिर से जांच प्रयोग व निरीक्षण से करना तो उसमें निहित ही है। एक वैज्ञानिक को ही प्रयोग व निरीक्षण के बाद अपेक्षित निष्कर्ष मिलेंगे, अन्य वैज्ञानिकों

को नहीं, ऐसा नहीं होता। प्रयोग और निरीक्षणों की योजना इस तरह बनानी चाहिए कि आंकड़ों के आधार निष्कर्ष का विश्लेषण किया जा सके। सब सावधानियां बरतने के बाद भी यह दावा नहीं किया जा सकता कि कोई निष्कर्ष अंतिम है। न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त को आईंस्टाइन के सापेक्षतावाद के सिद्धांत ने सुधारा। इसमें उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। अनेक प्रयोगों के बाद ही वे यह दावा कर सके थे। फिर भी वैज्ञानिक दुनिया में यह कोई नहीं मानता कि सापेक्षतावाद का सिद्धांत अन्तिम सत्य है।

अब ज्योतिष पर सिलसिलेवार विचार करते हैं।

(क) खगोलशास्त्र ऊपर बताई गई वैज्ञानिक पद्धति का कड़ाई से पालन करता है। क्या ज्योतिष में भी ऐसा होता है? क्या ज्योतिष में भी ऐसी ही कुछ मूल धारणाओं को मान कर चलते हैं? क्या प्राप्त जानकारी को फिर से जांचने के कुछ नियम हैं? अगर नियम हैं तो उनमें वस्तुनिष्ठता तो होगी ही; फिर वह किसी एक ज्योतिषी पर निर्भर नहीं हो सकती। क्या यह मान लेना उचित होगा कि जो भविष्यवाणियां गलत साबित हुईं वे सिद्धांत की गलती के कारण थीं?

दुर्भाग्य से इन सभी प्रश्नों के उत्तर नकारात्मक ही हैं। ज्योतिष विद्या के सभी समर्थक कहते हैं कि हमारे निष्कर्ष, हमारा शास्त्र एकदम सही हैं। अगर भविष्यवाणी गलत साबित होती है तो वे कहते हैं कि व्याख्या गलत हुई है। और प्रत्येक ज्योतिषी की व्याख्या अलग-अलग होती है। अब सवाल यह उठता है कि पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए पाठ्यपुस्तकें कैसी बनाई जाएं? और सभी का दृष्टिकोण एक न होने पर किसे शिक्षक नियुक्त किया जाए?

(ख) क्या ज्योतिषियों ने कॉर्ल पॉपर का नाम सुना है? वैज्ञानिक निष्कर्षों के बारे में कही गई उनकी इस बात को ज्योतिषी अनदेखा ही कर देते हैं कि किसी वैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर की गई कोई भविष्यवाणी गलत निकलती है तब वह सिद्धांत त्याज्य ही है। जो भविष्यवाणियां सच साबित हुई हैं वे उपयोगी हैं पर किसी सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए उतना ही काफी नहीं है। अगर आप किसी से पूछते हैं कि एक ज्योतिष द्वारा की गई भविष्यवाणियां गलत साबित हुईं तो वे कोई उत्तर नहीं दे पाते। क्योंकि लिखित रूप में रखने का रिवाज़ ही इनके यहां नहीं है।

(ग) मौसम विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र का निदान हमेशा ही सही नहीं होता। लेकिन वे वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग करते हैं। पृथ्वी पर मौसम का अंदाज़ लगाते समय वातावरण की विविध अवस्थाओं और पृथ्वी पर बहने वाली हवा की विभिन्न स्थितियों पर आधारित बहुत कठिन गणित करना पड़ता है। इस विज्ञान की पहेली अब धीरे-धीरे लोगों को समझ में आने लगी है। मानव निर्मित उपग्रह भी इसमें मदद करने लगे हैं। इस विज्ञान को मिले आधुनिक उपकरण, निरीक्षण पद्धति आदि से मौसम का अनुमान सत्य के काफी निकट होने के कारण मौसम विज्ञान अब विज्ञान माना जाने लगा है। चिकित्सा विज्ञान भी अपने आप को पूर्ण नहीं मानता। लेकिन जीवशास्त्र में हुई प्रगति के कारण हमें मानव शरीर की अधिक जानकारी मिलने लगी है। निदान और उस आधार पर किए गए उपचारों में भी सुधार हुआ है। किसी भी नई दवाई के बाज़ार में आने से पहले कई वर्षों तक विशेषज्ञों की निगरानी में उसकी अच्छी तरह जांच की जाती है। विज्ञान व तकनीक का उपयोग करते हुए क्या ज्योतिष विद्या में भी इस तरह की प्रगति हुई है?

(घ) हम इस मुद्दे पर पहले ही विचार कर चुके हैं। अगर हर बार ज्योतिषी अपनी भविष्यवाणियों में सुधार करते चलते तो उसे विज्ञान कहने में कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन गलत भविष्यवाणी करने वाले को छोटा-मोटा ज्योतिषी कहकर इससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता। क्योंकि फिर इस व्यवसाय में छुटभईयों के अलावा कोई दिखेगा ही नहीं। जिस तरह ज्योतिषी दूसरों को सलाह देते हैं, क्या उसी तरह उनके अपने व्यवसाय के बारे में कुछ ठोस कदम उठाने का समय नहीं आ गया है?

(च) वैज्ञानिकों ने ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों को बहुत बारीकी से जांचा परखा है। जितनी गहराई में वे

उतरते हैं उतनी ही अधिक गलतियां नज़र आती हैं। वैज्ञानिकों ने ये सभी बातें सप्रमाण लिखकर प्रकाशित भी की हैं। इसलिए यह कहना गलत है कि वैज्ञानिक ज्योतिषियों के काम की बारीकी से जांच किए बिना ही उनके काम पर गैर ज़िम्मेदाराना टिप्पणियां कर रहे हैं। उदाहरण के लिए हम मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय के मनोविकार विशेषज्ञ बर्नी सिल्वरमैन के अध्ययनों के कुछ उदाहरण ले सकते हैं। उनके अध्ययन का विषय था - क्या जन्म पत्रियां मिलने से दंपतियों का वैवाहिक जीवन सुखी होता है। उनके अध्ययन के अनुसार 2978 दंपतियों का वैवाहिक जीवन सुखी था। 478 दंपतियों में तलाक/विवाह विच्छेद हुआ था। इन सभी दंपतियों की जन्म पत्रियां ज्योतिषियों को दी गई (उन्हें नहीं बताया गया था कि कौन-सी जन्म पत्री किसकी है)। जन्म पत्रियों को देखकर ज्योतिषियों ने कहा कि कुछ विवाह सफल होंगे और कुछ असफल। उनकी भविष्यवाणियां वास्तविक जीवन से कहीं भी मेल नहीं खाती थी (ये सभी निष्कर्ष संख्यिकी की मान्य तकनीकों से निकाले गए थे)।

भविष्यवाणियों पर विश्वास क्यों

बॉक्स में दिए गए पर्चे के आखिरी भाग को पढ़ते हुए आप समझ ही गए होंगे कि विज्ञान द्वारा ज्योतिष विद्या का खोखलापन साबित होने के बावजूद वह क्यों फल-फूल रहा है। इस बात पर विचार करने की ज़रूरत है। मनुष्य को जीवन में कभी-कभी दुख, निराशा आदि का भी सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों का सामना करने में ज्योतिषी एक मनोचिकित्सक की भूमिका निभाता है। और इसलिए लोग ज्योतिषियों को पकड़े रहते हैं। स्वयं की हिम्मत/ज़िम्मेदारी पर उस परिस्थिति का सामना करने की बजाय ग्रहों पर ज़िम्मेदारी डालना मनुष्य के लिए आसान होता है। ऐसी स्थिति में वह तर्क का उपयोग करने की स्थिति में नहीं होता। इसे *बार्नम प्रभाव* के रूप में समझा जा सकता है।

ज्योतिष में विश्वास और अविश्वास करने वालों पर बार्नम प्रभाव किस तरह लागू होता है मनोचिकित्सकों ने

1975 में 186 प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने ज्योतिष के विरोध में एक पर्चा प्रकाशित किया था। जिसमें 18 नोबल पुरस्कार विजेता थे। उनका कहना है कि ज्योतिष विद्या अवैज्ञानिक है। उनके द्वारा हस्ताक्षरित पर्चे का महत्वपूर्ण हिस्सा इस प्रकार है।

'इस पर्चे पर हस्ताक्षर करने वाले हम सभी खगोल-भौतिक शास्त्री और अन्य अनेक विषयों के वैज्ञानिक ज्योतिषियों द्वारा की गई निजी व सार्वजनिक भविष्यवाणियों के बारे में लोगों को सावधान करना चाहते हैं। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी पर विश्वास करने वालों से हम कहना चाहते हैं कि इनकी भविष्यवाणियों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय कई लोगों को ज्योतिषियों की सलाह की ज़रूरत महसूस होती होगी। लोगों का विश्वास होता है कि उनकी पहुंच से दूर आकाश में स्थित ग्रहों की ताकत से उनका भविष्य निर्धारित होता है। हम सभी वैज्ञानिक आप लोगों को बताना चाहते है कि जीवन में घटने वाली सभी घटनाओं का सामना करने की हिम्मत हममें होनी चाहिए। अपना भविष्य अपने हाथ में होता है किन्हीं ग्रह नक्षत्रों के अधीन नहीं।"

(दी ह्यूमनिस्ट, सितम्बर/अक्टूबर 1975)

इसकी जांच पड़ताल की है। इसके लिए उन्होंने दो समूह लिए - एक ज्योतिष में विश्वास करने वाला और दूसरा अविश्वास करने वाला। दोनों समूहों के सभी व्यक्तियों को उनके स्वभाव के तीन अलग-अलग वर्णन लिखकर दिए गए। उनमें से एक वर्णन किसी ज्योतिषी ने जन्म पत्री देखकर लिखा था। दोनों ही समूहों को किसी दूसरे व्यक्ति का वर्णन विकल्प के रूप में दिया गया था। तीसरा वर्णन कृत्रिम और गोलमोल शब्दों में दिया गया था। बार्नम शैली का यह वर्णन निम्नलिखित था। देखिए शायद यह आप पर भी लागू हो जाए।

"औरों के प्रति आपके मन में अपनापन है। इसलिए उनके मन में आपके प्रति आदर है। आप स्वयं को तटस्थ नज़रों से देखते हैं। आप बहुत मेहनती है लेकिन अपनी मेहनत का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं करते।

बार्नम प्रभाव

बार्नम प्रभाव एक मनोविज्ञान होता है। ज्योतिषी द्वारा की गई भविष्यवाणी में से व्यक्ति अपने मतलब की बातों को चुन लेता है। लेकिन स्वयं कोशिश या मेहनत करने की बात को अनदेखा कर देता है। ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां ऐसी भाषा में होती हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को यही लगता है कि वह उसी के बारे में है। (बार्नम और बेली नामक सर्कस कंपनी के मालिक पी.टी. बार्नम से जब उनकी व्यावसायिक सफलता का राज़ पूछा गया तो उनका कहना था कि हमारे सर्कस में विभिन्न प्रकार के खेल होते हैं, दर्शकों की पसन्द भी भिन्न-भिन्न होती है। लेकिन सर्कस में सभी दर्शकों को अपनी पसन्द का कुछ न कुछ मिलने की संतुष्टि होती है। इसलिए इसे बार्नम प्रभाव कहते हैं।)

आपके स्वभाव में कुछ कमियां हैं जिनकी भरपाई आप अन्य बातों से करते हैं। ऊपरी तौर पर आप अनुशासित और निर्मोही दिखते हैं मगर अंदर से चिन्ताएं आपको खाए जाती हैं, कई बार डर भी लगता है कि क्या आपने सही निर्णय लिया है या उचित समय पर उचित निर्णय लिया है या नहीं। आप अपने काम में बदलाव चाहते हैं और कुछ अलग करने की इच्छा रखते हैं। लेकिन मर्यादा और बंधनों के कारण आप चाहते हुए भी वैसा नहीं कर पाते; इसलिए आप असंतुष्ट रहते हैं। आपको गर्व है कि आप स्वतंत्र रूप से विचार करने वाले व्यक्ति हैं। जब तक ठोस सबूत न हो आप दूसरों की बातों से आसानी से प्रभावित नहीं होते। औरों के सामने अपनी बात स्पष्ट रूप से कहना आपको अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी आप समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करते हैं। आप मिलनसार है और सौजन्य की मूर्ति भी। कई बार कुछ बातें आप मन में ही रखते हैं। आप बहुत चौकन्ने रहते हैं। आप बहुत स्पष्टवादी नहीं है। आपकी कई सारी इच्छाएं साकार न होने जैसी हैं। अपना सभी कुछ ठीक-ठाक हो जाए यही आपके जीवन का उद्देश्य है।"

सभी समूहों के प्रत्येक व्यक्ति को उपरोक्त तीन वर्णन दिए गए। उनसे कहा गया कि स्वयं के ऊपर कौन-सा वर्णन लागू होता उस आधार पर प्रत्येक का मूल्यांकन करें। अधिकांश ने निर्णय दिया कि तीसरा (यानी कृत्रिम) वर्णन ही उन पर ज़्यादा लागू होता है। इस आधार पर यह सवाल तो उठता ही है कि ज्योतिषियों पर कहां तक विश्वास किया जाए? लेकिन यह समझने में भी आसानी होती है कि लोग ज्योतिषियों की बातों पर क्यों विश्वास करते हैं।

निष्कर्ष

लोगों को भविष्यवाणियों से दिलासा मिलता है और निर्णय लेते समय कुछ हद तक मदद भी। इसलिए ज्योतिष तो चलता ही रहेगा और एक तरह से यह भी कहा जा सकता है कि यह और अधिक फलेगा-फूलेगा। इसलिए मनुष्य के विवेकशील होने के प्रति थोड़ी शंका होना भी स्वाभाविक है क्योंकि ज्योतिष का तार्किक समर्थन नहीं किया जा सकता। इसा कारण ज्योतिष विद्या का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय में शुरू करना, ज्योतिष के आधार पर यात्रा, भवन निर्माण आदि के फैसले करना, मौसम की जानकारी देना या शेयर बाज़ार में पैसा लगाना समय के विरुद्ध जाना होगा। पश्चिमी देशों में ज्योतिष को मनोरंजन के रूप में देखा जाता है, इसे कोई भी गंभीरता से नहीं लेता। लेकिन हमारे देश में उसे गंभीरता से लिया जाता है। समाज के सभी स्तरों तक ज्योतिष की पहुंच है। सभी जाति, धर्म, शिक्षा क्षेत्र, आर्थिक लेन-देन, राजनीति इत्यादि में लोग इसे आदर देते हैं। विवाह तय करते समय, मंत्रिमंडल का विस्तार करते समय, नया व्यापार शुरू करते समय जन्म पत्री देखी जाती है।

विकसित देशों से प्रतिस्पर्धा करते समय विवेकशीलता का परिचय, कार्यक्षम व्यक्ति और व्यवस्थाएं लाना काफी महत्वपूर्ण है। लोगों को अंधभक्त या भाग्यवादी बनाने से प्रगति होना संभव नहीं है। *(स्रोत फीचर्स)*